अपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र

दिगंत - भाग - 2 गद्य भाग

शीर्षक - रोज

लेखक - सच्चिदानन्द हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

प्रश्न:- 'रोज' शीर्षक कहानी का सारांश लिखें।

उत्तर:- 'रोज' कथा साहित्य में क्रान्तिकारी परिवर्तन के प्रणेता महान कथाकार सच्चिदानन्द हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय की सर्वाधिक चर्चित कहानी है। प्रस्तुत कहानी में सम्बन्धों की वास्तविकता को एकान्त वैयक्तिक अनुभूतियों से अलग जाकर सामाजिक सन्दर्भ में देखा गया है। मध्यवर्ग की पारिवारिक एकरसता को जितनी मार्मिकता से कहानी व्यक्त कर सकी है वह उस की कहानियों में विरल है।

लेखक अपने दूर ~~की~~ के रिश्ते की बहन मालती जिसे सखी कहना उचित है, से मिलने अठारह मील पैदल चलकर पहुँचता है। मालती और लेखक का जीवन ~~इकट्ठे~~ इकट्ठे खेलने, पिटने, स्वेच्छा एवं स्वच्छन्दता तथा भ्रातृत्व के छोटेपन ~~के~~ के बंधनों से मुक्त बीता था। आज मालती विवाहिता है, एक बच्चे की माँ भी है। वार्तालाप के क्रम में आए उतार-चढ़ाव ~~में~~ में लेखक अनुभव करता है कि मालती की आँखों में विचित्र-सा-भाव है, मानो वह भीतर कहीं कुछ चेष्टा कर रही हो, किसी बीती बात को याद करने की। किसी बिखरे हुए वायुमण्डल को पुनः जगाकर गतिमान करने की और चेष्टा में सफल न हो चिर विस्मृत हो गयी हो। मालती रोज कोल्हू की बैल की तरह व्यस्त रहती है। उसका जीवन गैंग्रीन मर्ज के समान है जिसका ऑपरेशन उसके डाक्टर पति द्वारा किया जाता है। पूरे दिन काम करना, बच्चे की देख-भाल करना और पति का इंतजार करना इतने में ही मानों उसका जीवन सिमट गया है।

वातावरण, परिस्थिति और उसके प्रभाव में ढलते हुए एक गृहिणी के चरित्र का मनोवैज्ञानिक उद्घाटन अत्यन्त कलात्मक रीति से लेखक यहाँ प्रस्तुत करता है। डॉ० पति के काम पर चले जाने के

(शेष आगे)

बाद का सारा समय मालती को घर में एकाकी काटना होता है। उसका दुर्बल और चिड़चिड़ा पुत्र हमेशा रोता रहता है। मालती उसकी देख-भाल करती हुई सुबह से रात ग्यारह बजे तक घर के कार्यों में अपने को व्यस्त रखती है। उसका जीवन उदासी के बीच यंत्रवत चल रहा है। किसी प्रकार का उल्लास या उत्साह उसके जीवन में नहीं रह गए हैं।

इस प्रकार लेखक मध्यवर्गीय भारतीय समाज में घरेलु स्त्री के जीवन और मनोदशा पर सहानुभूति पूर्ण मानवीय दृष्टि केन्द्रित करता है। कहानी के गर्भ में अनेक सामाजिक प्रश्न विचारोत्तेजक रूप में पैदा होते हैं।

डॉ० देव चरण प्रसाद 3/10/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० ऊ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र

'पथिक' खण्ड काव्य

कवि - श्री राम नरेश त्रिपाठी

प्रश्न :- 'पथिक' खण्ड काव्य के द्वितीय सर्ग में 'मुनि' पथिक को कर्मवाद का पाठ पढ़ाते हुए उसे क्या सन्देश देना चाहता है? उस पर प्रकाश डालें।

उत्तर :- 'पथिक' खण्ड काव्य के दूसरे सर्ग में मुनि पथिक को कर्मवाद का पाठ पढ़ाते हुए कहते हैं कि यह संसार भावभूमि नहीं है, कर्मभूमि है। सृष्टि के समस्त पदार्थ, चाहे जड़ हो चेतन सभी अपने-अपने काम में लगे हुए हैं। सबको अपनी-अपनी धुन सवार है। सभी किसी-न-किसी निश्चित लक्ष्य के पीछे दौड़ रहे हैं। एक उदाहरण देकर मुनि ने इस भाव को इस प्रकार स्पष्ट किया है- पेड़ की पत्तियाँ सदैव धूप-पानी सहती हैं, लेकिन कभी उफ तक नहीं करतीं और जीवन भर अपने आस-पास की पृथ्वी को छाया प्रदान करती रहती हैं। जब एक तुच्छ पत्ता अपने कर्तव्य के प्रति इतना सजग है, तो फिर मनुष्य ही क्यों निष्क्रिय रहे। तात्पर्य यह है कि तुम मनुष्य हो, अतः तुम्हें और भी सचेष्ट रहना चाहिए।

कवि ने जीवन के यथार्थ को मुनि के माध्यम से पलायनवादी पथिक को समझाने का प्रयास किया है। वैसे भी सार्वजनिक जीवन में 'कर्म' के बिना कोई मधुर फल प्राप्त नहीं होता है। कर्म ही जीवन है। संसार में समस्त जीव अपने कर्म के प्रति प्रयत्नशील है। मनुष्य तो सब जीवों में अधिक बुद्धिमान है। मनुष्य को विशेष रूप से अपने कर्तव्य के प्रति सचेष्ट रहना चाहिए।

'मुनि' द्वारा पथिक को दिये गये सन्देश ने उसकी सोच को काफी प्रभावित किया और वह जीवन में कर्मवाद को श्रेष्ठ मानते हुए उसे आत्मसात कर लेता है।

डॉ० देवचरण प्रसाद 30/10/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० कु० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

उसके हृदय को आघात लगता है। वह अपना बलिदान करने को तैयार हो जाता है। मुंशी तोताराम उस स्थिति से निपटने के लिए उसे बोर्डिंग में रहने के लिए भेज देते हैं।

मंसाराम को निर्मला के अभिनव और यथार्थ स्थिति का पता लगता है। उसके हृदय पर गहरा आघात पहुँचता है। इस आघात से वह अपने को सम्हाल नहीं पाता है। अन्त में उसकी मृत्यु हो जाती है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
30/10/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अण्टिम-पत्र

'निर्मला' उपन्यास

लेखक - मुंशी प्रेमचन्द

प्रश्न :- 'निर्मला' उपन्यास की समीक्षा का शेष अंश -

उत्तर :- निर्मला की चिता में आग लगवाकर मानो उपन्यासकार कुत्सित दहेज-प्रथा और वृद्ध-विवाह की प्रथा को भस्म कर देने का सन्देश देता है। कथानक का समापन करुणांत है। कथानक में एक साथ कई आत्म-हत्याएँ और मृत्युएँ होती हैं। इससे कथानक अतिरंजित लगने लगता है।

'निर्मला' उपन्यास की कथावस्तु का संगठन औपन्यासिक है। इसमें दो कहानियाँ गूँथी हुई हैं- मुख्य कथा निर्मला की है। पहली सहायक कथा सुधा की है। दूसरी सहायक कथा कृष्णा की है।

बाबू उदयभानु अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए निर्मला की शादी घर फूँक की नीति अपनाकर करने को उद्यत हो जाते हैं। फिर फिजूलखर्ची पर अपनी पत्नी से तकरार हो जाती है और बाबू उदयभानु घर छोड़कर रात्रि में निकल पड़ते हैं। एक व्यक्ति जिसे उन्होंने सजा कराई थी, अँधेरे में प्रहार कर उनका काम तमाम कर देता है। निर्मला की माँ कल्याणी विवश होकर उसका विवाह तीन पुत्रों का पिता वृद्ध मुंशी-तोताराम से कर देती है। मुंशी तोताराम के पुत्र मंसाराम, जियाराम और सियाराम हैं। मंसाराम सोलह वर्ष का किशोर है। परिवार में मुंशी तोताराम की विधवा बहिन भी रहती है। निराश्रा निर्मला को मुंशी तोताराम से अतिशय प्यार और सम्मान मिलता है, परन्तु निर्मला की उदासिनता यथावत् बनी रहती है। उसे ननद रुक्मिणी के व्यंग्य-बाणों का भी सामना करना पड़ता है। निर्मला मंसाराम से अँग्रेजी पढ़ती है और उसे पुत्रवत् सहज स्नेह करती है। परन्तु मुंशी जी इसे सन्देह की दृष्टि से देखते हैं। निर्मला मुंशी जी के विचारों को भाँपकर मंसाराम के साथ क्रूरता का का व्यवहार करती है। किशोर हृदय मंसाराम यथार्थ स्थिति को नहीं समझ पाता है।

शेष आगे -